Series RSH/1

कोड नं.
Code No. **3/1/1**

रोल नं.
Roll No.

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **16** हैं।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 17 प्रश्न हैं।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है। प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जायेगा। 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे।

संकलित परीक्षा-II

SUMMATIVE ASSESSMENT-II

हिन्दी

HINDI

(पाठ्यक्रम अ)

(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 90*

Time allowed : 3 hours] *[Maximum marks : 90*

निर्देश :

(i) *इस प्रश्न-पत्र के* **चार** *खण्ड हैं – क, ख, ग और घ।*

(ii) *चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना* ***अनिवार्य*** *है।*

(iii) *यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए।*

खण्ड 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1×5=5

मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है। समाचार पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। ऐसा लगता है देश में कोई ईमानदार आदमी रह ही नहीं गया है। हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता; जो भी कुछ करेगा, उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिये जायेंगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते? यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम या बिलकुल ही नहीं। यह चिन्ता का विषय है।

तिलक और गांधी के सपनों का भारतवर्ष क्या यही है? विवेकानन्द और रामतीर्थ का आध्यात्मिक ऊँचाई वाला भारतवर्ष कहाँ है? रवीन्द्रनाथ ठाकुर और मदनमोहन मालवीय का महान, सुसंस्कृत और सभ्य भारतवर्ष पतन के किस गहन गर्त में जा गिरा है ? आर्य और द्रविड़, हिन्दू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों की मिलनभूमि 'महामानव समुद्र' क्या सूख ही गया है ?

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ और फरेब का रोजगार करने वाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सचाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है। किन्तु ऐसी दशा से हमारा उद्धार जीवन-मूल्यों में आस्था रखने से ही होगा। ऐसी स्थिति में हताश हो जाना ठीक नहीं है।

(i) 'मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है' वाक्य का आशय है –

(क) लेखक के मन में पछतावा होता है

(ख) लेखक का मन दुखी हो जाता है

(ग) लेखक को अपराध भाव की अनुभूति होती है

(घ) लेखक का हृदय देश की दुर्दशा से चिन्तित हो उठता है।

(ii) कौनसी स्थिति चिन्ता का विषय है ?

(क) व्यक्ति के गुणों की उपेक्षा और दोषों पर अधिक ध्यान

(ख) व्यक्ति का कर्मशीलता के प्रति उपेक्षा का भाव

(ग) व्यक्ति की ईमानदारी की उपेक्षा

(घ) निठल्ले लोगों की सुखमयता

(iii) 'महामानव समुद्र क्या सूख ही गया' का अभिप्राय है –

(क) विशाल सागर जलहीन हो गया

(ख) समुद्र का विस्तार सीमित हो गया

(ग) आदर्शों का समन्वय और सद्भाव लुप्त हो गया

(घ) भारत का जलनिधि रत्नहीन हो गया

(iv) इस उथल-पुथल में देशवासियों के लिए संदेश है –

(क) ईमानदारी और मेहनत से जीविका चलाना

(ख) झूठ और फरेब से नफरत करना

(ग) जीवन-मूल्यों में आस्था रखना

(घ) देश की समृद्धि के लिए कार्य करना

(v) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है –

(क) समाज में व्याप्त अनैतिकता

(ख) महान् महर्षियों का देश भारत

(ग) जीवन-मूल्यों में आस्था

(घ) निराशाजनक स्थिति और हमारा देश

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1×5=5

भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया। उसकी दृष्टि में मनुष्य के भीतर जो आन्तरिक तत्व स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन और बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना, बहुत निकृष्ट आचरण है। भारतवर्ष ने उन्हें सदा संयम के बन्धन से बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है।

इस देश के कोटि-कोटि दरिद्र जनों की हीन अवस्था को सुधारने के लिए अनेक कायदे-कानून बनाए गए। जिन लोगों को इन्हें कार्यान्वित करने का काम सौंपा गया वे अपने कर्त्तव्यों को भूलकर अपनी सुख-सुविधा की ओर ज्यादा ध्यान देने लगे। वे लक्ष्य की बात भूल गए और लोभ, मोह जैसे विकारों में फँसकर रह गए। आदर्श उनके लिए मज़ाक का विषय बन गया और संयम को दकियानूसी मान लिया गया। परिणाम जो होना था, वह हो रहा है – लोग लोभ और मोह में पड़कर अनर्थ कर रहे हैं, इससे भारतवर्ष के पुराने आदर्श और भी अधिक स्पष्ट रूप से महान और उपयोगी दिखाई देने लगे हैं। अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

(i) लेखक के मतानुसार निकृष्ट आचरण का स्वरूप है –
   (क) व्यक्ति का दुश्चरित्र होना और आदर्शों से पतन
   (ख) स्वार्थ हेतु दूसरों के कार्यों में बाधा
   (ग) मन और बुद्धि पर लोभ-मोह आदि का नियंत्रण
   (घ) कानून के उल्लंघन द्वारा सामाजिक अव्यवस्था

(ii) लोभ-मोह आदि विकारों के नियंत्रण का साधन है -

(क) धर्म

(ख) कानून

(ग) संयम

(घ) सत्संगति

(iii) करोड़ों गरीबों की दशा सुधारने के प्रयास सफल नहीं हुए क्योंकि लागू करने वाले -

(क) स्वार्थवश अपना कर्त्तव्य भूल गए

(ख) काम पूरा न कर सके

(ग) सफलता के प्रति शंकालु हो गए

(घ) पर्याप्त धन न होने से असफल हो गए

(iv) आदर्श एवं संयम को दकियानूसी मानने का दुष्परिणाम है -

(क) देश में फैली अराजकता

(ख) समाज में व्याप्त नैतिकता

(ग) लोभ और मोह से हो रहे अनर्थ

(घ) भ्रष्ट साधनों से अर्जित धन

(v) 'दकियानूसी' का पर्यायवाची है -

(क) भाग्यवादी

(ख) रूढ़िवादी

(ग) साम्यवादी

(घ) विस्तारवादी

3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उचित उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1×5=5

बिन बैसाखी अपनी शर्तों पर, मैं मदमस्त चला।।
सब्ज़बाग़ को दिखा-दिखा
दुनिया रह-रह मुसकाई।
कंचन और कामिनी ने भी
अपनी छटा दिखाई।
सतरंगे जग के साँचे में, मैं न कभी ढला।।
चिनगारी पर चलते-चलते
रुका-झुका ना पल-छिन।
गिरे हुओं को रहा उठाता
गले लगाता अनुदिन।
हालाहल पीते-पीते ही मैं जीवन-भर चला।।
कितने बढ़े-चढ़े द्रुत चलकर
शैलशिखर शृंगों पर।
कितने अपनी लाश लिए
फिरते अपने कंधों पर।
सबकी अपनी अलग नियति है, है जीने की कला।।
आँधी से जूझा करना ही
बस आता है मुझको।
पीड़ाओं के संग-संग जीना
भाता है बस मुझको।
मैं तटस्थ, जो भी जग समझे कह ले बुरा-भला।।

(i) सतरंगी संसार कवि को मोहित न कर सका, क्योंकि –

(क) सांसारिकता के प्रति उसका लगाव नहीं है

(ख) मोहकता उसको मोहने में समर्थ नहीं है

(ग) उसको केवल अपने सिद्धान्तों से ही प्यार है

(घ) वह सांसारिक मोह को तुच्छ समझता है

(ii) कवि को जीवन में क्या रास नहीं आया ?

(क) कष्टों से भरे मार्ग पर चलना

(ख) दीनों–दलितों का उद्धार करना

(ग) जीवन के सुखमय क्षणों को भोगना

(घ) आजीवन वेदनाओं के विष का पान करना

(iii) कवि का विश्वास है कि हरेक का भाग्य अलग–अलग होता है, इसीलिए संसार में –

(क) कोई धनिक है तो कोई धनहीन

(ख) कोई उन्नति करता है तो कोई निराश जीवन जीता है

(ग) कोई जीवन में सुख भोगता है तो कोई दुख

(घ) कोई सम्पन्न होकर भी सुखों से वंचित रहता है

(iv) कवि ने जीवन बिताया है –

(क) कष्टों से जूझकर और पीड़ाओं को चूमकर

(ख) दुखियों के दुख दूर कर और निराश्रितों को आश्रय देकर

(ग) डूबते को बचाकर और भूखों को भोजन देकर

(घ) क्रान्ति का बिगुल बजाकर और मातृभूमि को जीवन देकर

(v) 'कितने बढ़े–चढ़े द्रुत चलकर शैल–शिखर शृंगों पर' अलंकार है –

(क) उपमा

(ख) अनुप्रास

(ग) रूपक

(घ) यमक

4. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर के लिए उचित विकल्प चुनकर लिखिए : 1×5=5

जब कभी मछेरे को फेंका हुआ
फैला जाल
समेटते हुए देखता हूँ
तो अपना सिमटता हुआ
'स्व' याद हो आता है –
जो कभी समाज, गाँव और
परिवार के वृहत्तर परिधि में
समाहित था
'सर्व' की परिभाषा बनकर,
और अब केन्द्रित हो
गया हूँ मात्र बिन्दु में।
जब कभी अनेक फूलों पर,
बैठी, पराग को समेटती
मधुमक्खियों को देखता हूँ
तो मुझे अपने पूर्वजों की
याद हो आती है,
जो कभी फूलों को रंग, जाति, वर्ग
अथवा कबीलों में नहीं बाँटते थे
और समझते रहे थे कि
देश एक बाग़ है
और मधु–मनुष्यता
जिससे जीने की अपेक्षा होती है।
किन्तु अब
बाग़ और मनुष्यता
शिलालेखों में जकड़ गई है
मात्र संग्रहालय की जड़ वस्तुएँ।

(i) कविता में 'स्व' शब्द का आशय है –

(क) धन, सम्पत्ति, दौलत

(ख) अपना, अपनापन, लगाव

(ग) कल्याण, हितभावना, भलाई

(घ) प्रशासन, शासन, अनुशासन

(ii) किसी समय में कवि की 'स्व' की सीमा थी –

(क) अपने माता–पिता तक

(ख) अपनी पत्नी और बच्चों तक

(ग) पूरे समाज और गाँव तक

(घ) केवल घनिष्ठ मित्रों तक

(iii) पुराने समय में कवि के पूर्वज विश्वास करते थे –

(क) रंग के आधार पर देशवासियों के विभाजन में

(ख) जाति के आधार पर देशवासियों के वर्गीकरण में

(ग) भाषा एवं धर्म के आधार पर देश के बँटवारे में

(घ) भिन्न वर्गों एवं जातियों की एकता में

(iv) देश को एक बाग़ माना गया है क्योंकि यहाँ विविध प्रकार के –

(क) फूल होते हैं

(ख) तितलियाँ होती हैं

(ग) लोग रहते हैं

(घ) पशु–पक्षी रहते हैं

(v) काव्यांश का संदेश है –

(क) मनुष्यता की परिभाषा बदल गई है

(ख) मनुष्यता जड़ वस्तु बनकर रह गई है

(ग) मनुष्यता का स्वरूप संकीर्ण हो गया है

(घ) मनुष्यता संगठन में नहीं विघटन में देखी जाती है

खण्ड 'ख'

5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए : 1×5=5

(क) लखनऊ स्टेशन से गाड़ी छूट रही थी।

(ख) खीरे की पनियाती फाँकें बहुत स्वादिष्ट थीं।

(ग) तुम्हें भागवत ध्यान से पढ़नी चाहिए।

(घ) बिस्मिल्ला खाँ इस मंगलध्वनि के नायक थे।

(ङ) अरे, तुम भी आ गए ?

6. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1×5=5

(क) मैंने सुना है कि तुम अपनी कक्षा में प्रथम आए हो – वाक्य का प्रकार बताइए।

(ख) वह स्टेशन पहुँचा और हम वहाँ से चल दिए – यह किस प्रकार का वाक्य है ?

(ग) उन्होंने जैसे ही शहनाई बजानी शुरू की, सब उसकी ध्वनि में मग्न हो गए – संयुक्त वाक्य में बदलिए।

(घ) मेरे पास एक किताब है जो बहुत रुचिकर है – सरल वाक्य में बदलिए।

(ङ) वह बहुत विनम्र है और सर्वत्र सम्मान प्राप्त करती है – मिश्र वाक्य में रूपान्तरित कीजिए।

7. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1×5=5

(क) मालिक झोली से सुर का फल निकालकर मेरी ओर उछालेगा – कर्मवाच्य में बदलिए।

(ख) घायल होने के कारण वह उड़ नहीं पाया – भाववाच्य में बदलिए।

(ग) मोहिनी क्षण भर के लिए भी शान्त नहीं बैठती है – भाववाच्य में बदलिए।

(घ) श्रद्धालु काशीवासियों द्वारा इस सभा का आयोजन किया जाता है – कर्तृवाच्य में बदलिए।

(ङ) उन्होंने दोनों भाइयों को पढ़ाया – कर्मवाच्य में बदलिए।

8 . निम्नांकित काव्यांशों में प्रयुक्त अलंकारों के नामों का उल्लेख कीजिए : 1×5=5

(क) क्यों सहे संसार हाहाकार।

(ख) आँख लगती है तब आँख लगती ही नहीं।

(ग) नील गगन-सा शान्त हृदय था हो रहा।

(घ) नीरजनयन भावते जी के

(ङ) देखा यमुना का मृदुल हास।

खण्ड 'ग'

9. निम्नांकित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1×5=5

उस समय तक हमारे परिवार में लड़की के विवाह के लिए अनिवार्य योग्यता थी - उम्र में सोलह वर्ष और शिक्षा में मैट्रिक। सन् '44 में सुशीला ने यह योग्यता प्राप्त की और शादी करके कोलकाता चली गई। दोनों बड़े भाई भी आगे पढ़ाई के लिए बाहर चले गए। इन लोगों की छत्र-छाया के हटते ही पहली बार मुझे नए सिरे से अपने वज़ूद का एहसास हुआ। पिताजी का ध्यान भी पहली बार मुझ पर केन्द्रित हुआ। लड़कियों को जिस उम्र में स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुघड़ गृहिणी और कुशल पाक-शास्त्री बनने के नुस्खे जुटाए जाते थे, पिताजी का आग्रह रहता था कि मैं रसोई से दूर ही रहूँ। रसोई को वे भटियारखाना कहते थे और उनके हिसाब से वहाँ रहना अपनी क्षमता और प्रतिभा को भट्टी में झोंकना था।

(i) लड़की की वैवाहिक योग्यता से सिद्ध होती है, उस परिवार की :

(क) स्वतंत्र विचारधारा

(ख) परम्परावादी मान्यता

(ग) पाश्चात्य विचारधारा

(घ) अत्याधुनिक सोच

(ii) बड़े बहन-भाई के परिवार से जाने के बाद :

(क) परिवार में लेखिका का महत्व बढ़ गया

(ख) माता-पिता से अधिक प्यार मिलने लगा

(ग) लेखिका को अपने अस्तित्व का बोध हुआ

(घ) लेखिका को पाक-शास्त्र पढ़ाया जाने लगा

(iii) लेखिका के पाक-शास्त्री बनने के विषय में पिताजी का मानना था -

(क) पाक-क्रिया की कुशलता से लड़की सुघड़ गृहिणी बनती है

(ख) विवाह के उपरान्त ससुराल में उसकी सराहना होती है

(ग) उसका गृहस्थ सदा सुखी और स्वस्थ रहता है

(घ) रसोई के काम से लड़की की योग्यता और प्रतिभा कुंद हो जाती है

(iv) 'पिताजी का आग्रह था कि मैं रसोई से दूर ही रहूँ' - वाक्य का प्रकार है -

(क) सरल

(ख) संयुक्त

(ग) मिश्र

(घ) साधारण

(v) 'इन लोगों की छत्रछाया हटते ही' कथन में 'इन लोगों' से तात्पर्य है -

(क) क्षमता और प्रतिभा

(ख) भाई-बहिन

(ग) माता-पिता

(घ) सखी-सहेली

अथवा

मसलन बिस्मिल्ला खाँ की उम्र अभी 14 साल है। वही काशी है। वही पुराना बालाजी का मंदिर जहाँ बिस्मिल्ला खाँ को नौबतखाने रियाज़ के लिए जाना पड़ता है। मगर एक रास्ता है बालाजी मंदिर तक जाने का। यह रास्ता रसूलनबाई और बतूलनबाई के यहाँ से होकर जाता है। इस रास्ते से अमीरुद्दीन को जाना अच्छा लगता है। इस रास्ते न जाने कितने तरह के बोल-बनाव, कभी ठुमरी, कभी टप्पे, कभी दादरा के मार्फत ड्योढ़ी तक पहुँचते रहते हैं। रसूलन और बतूलन जब गाती हैं तब अमीरुद्दीन को खुशी मिलती है। अपने ढेरों साक्षात्कारों में बिस्मिल्ला खाँ साहब ने स्वीकार किया है कि उन्हें अपने जीवन के आरम्भिक दिनों में संगीत के प्रति आसक्ति इन्हीं गायिका बहिनों को सुनकर मिली है। एक प्रकार से उनकी अबोध उम्र में अनुभव की स्लेट पर संगीत प्रेरणा की वर्णमाला रसूलनबाई और बतूलनबाई ने उकेरी है।

(i) बिस्मिल्ला खाँ का मूल नाम है –

(क) सादिक हुसैन

(ख) शम्सुद्दीन

(ग) अमीरुद्दीन

(घ) अलीबख्श

(ii) बिस्मिल्ला खाँ को बालाजी मन्दिर जाने के लिए एक खास रास्ता ही क्यों पसंद था ?

(क) वह रास्ता छोटा था

(ख) उस रास्ते पर उनके मित्रों के घर थे

(ग) उस रास्ते पर दो बहिनों का गायन सुनने को मिलता था

(घ) उन्हें ठुमरी, टप्पा, दादरा पसंद था।

(iii) कैसे कहा जा सकता है कि उन्हें संगीत की प्रेरणा इन दोनों बहिनों से मिली ?

(क) इनका गायन बहुत उत्कृष्ट था

(ख) यह गायन प्राय: उन्हें सुनने को मिलता था

(ग) इस गायन के प्रति आसक्ति को उन्होंने स्वीकार किया है

(घ) इस गायन में एक विशेष मोहकता थी।

(iv) संगीत का एक रूप नहीं है –

(क) शहनाई

(ख) टप्पा

(ग) ठुमरी

(घ) दादरा

(v) 'रसूलन और बतूलन जब गाती हैं तब अमीरुद्दीन को खुशी मिलती है' – वाक्य का प्रकार है –

(क) सरल

(ख) संयुक्त

(ग) मिश्र

(घ) साधारण

10. स्त्री शिक्षा के विषय में आप महावीर प्रसाद द्विवेदी के विचारों से कहाँ तक सहमत हैं ? उचित तर्क देकर अपने विचारों की पुष्टि कीजिए। 4

11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2×3=6

(क) आप कैसे कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ एक सच्चे और अच्छे इन्सान थे?

(ख) आग के आविष्कार के पीछे मानव की कौनसी प्रेरणा रही होगी ? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

(ग) देश की आज़ादी के संघर्ष में मन्नू भण्डारी की सक्रिय भागीदारी को लेकर पिताजी के साथ उनके टकराव की स्थिति को अपने शब्दों में लिखिए।

12. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1×5=5

बालकु बोलि बधौं नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।।
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रिय कुल द्रोही।।
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महि देवन्ह दीन्ही।।
सहसबाहु भुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।।

(क) काव्यांश में किसका किसके प्रति संबोधन है ?

(ख) परशुराम की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ग) 'परशु' की क्या विशेषता थी ? लिखिए।

(घ) अलंकार बताइए – भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्हीं

(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए 'केवल मुनि जड़ जानहि मोही'।

अथवा

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह

(ग) भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में दुलारी और टुन्नू ने अपना योगदान किस प्रकार किया ?

(घ) 'साना साना हाथ जोड़ि' यात्रा वृत्तान्त में वर्णित ऐसी घटना का उल्लेख कीजिए जिसने आपको बहुत प्रभावित किया हो।

खण्ड 'घ'

16. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए : 5

(क) **अविस्मरणीय घटना**

- कब और कहाँ
- आपकी भूमिका
- आप पर प्रभाव

(ख) **मेरे सपनों का जीवन**

- महत्वाकांक्षा
- रुचि का महत्व
- लक्ष्य-निर्धारण

(ग) **ओलम्पिक खेलों में भारत**

- खेलों का महत्व
- विजेता खिलाड़ी
- भारत का स्थान

17. विदेश यात्रा में सभी प्रकार की व्यवस्था करने वाले मित्र के प्रति आभार की अभिव्यक्ति करते हुए एक पत्र लिखिए। 5

अथवा

विद्यालय में दसवीं कक्षा की परीक्षा से पूर्व विभिन्न विषयों के अध्यापन की अच्छी व्यवस्था करने के लिए प्रधानाचार्य एवं अध्यापकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का एक पत्र लिखिए।

(ग) भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में दुलारी और टुन्नू ने अपना योगदान किस प्रकार किया ?

(घ) 'साना साना हाथ जोड़ि' यात्रा वृत्तान्त में वर्णित ऐसी घटना का उल्लेख कीजिए जिसने आपको बहुत प्रभावित किया हो।

खण्ड 'घ'

16. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए : 5

(क) **अविस्मरणीय घटना**

- कब और कहाँ
- आपकी भूमिका
- आप पर प्रभाव

(ख) **मेरे सपनों का जीवन**

- महत्वाकांक्षा
- रुचि का महत्व
- लक्ष्य-निर्धारण

(ग) **ओलम्पिक खेलों में भारत**

- खेलों का महत्व
- विजेता खिलाड़ी
- भारत का स्थान

17. विदेश यात्रा में सभी प्रकार की व्यवस्था करने वाले मित्र के प्रति आभार की अभिव्यक्ति करते हुए एक पत्र लिखिए। 5

अथवा

विद्यालय में दसवीं कक्षा की परीक्षा से पूर्व विभिन्न विषयों के अध्यापन की अच्छी व्यवस्था करने के लिए प्रधानाचार्य एवं अध्यापकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का एक पत्र लिखिए।